Blessings by the Elders

श्री तरुण जी की सिद्धहस्त लेखनी, उत्कट संवेदनशील मन तथा घटित का निरीक्षण–परीक्षण करनेवाला ठोस विधायक दृष्टिकोण उनकी दो–टूक निर्भीक कृति को तीक्ष्णता व व्याकुलता प्रदान करता है। जगती के सद्यः परिदृश्य में हर भारतीय को उस तीक्ष्णता तथा व्याकुल अस्वस्थता की आवश्यकता है।

मोहन राव भागवत
सरसंघचालक , रा.स्व.संघ

श्री तरुण जी ने अपनी सशक्त लेखनी के द्वारा सनातन सांस्कृतिक मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में हर घटना को निरखा–परखा है और उस शाश्वत दिशा की ओर संकेत किया है जिस पर चलकर ही अपना देश पुनः विश्व में अपना गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकता है। उनके लेखों में भारत की उस सुप्त अस्मिता और आत्म विश्वास को जगाने का भी अनवरत प्रयास है जिसके बिना कोई भी राष्ट्र प्रगति के मार्ग पर अग्रसर हो ही नहीं सकता।

कुप्.सी.सुदर्शन
निवर्त्तमान सरसंघचालक, रा.स्व.संघ

तरुण विजय जी ने अपनी लेखनी और कर्तृत्व से असाधारण काम कर दिखाए हैं। दिखने में छोटे, लेकिन कार्यों में बड़े, ऐसे तरुण जी ने सिन्धु दर्शन कार्यक्रम की कल्पना की। राष्ट्रगीत का अधूरापन दूर हो गया।

अटलबिहारी वाजपेयी
तत्कालीन प्रधानमंत्री (जून 2002)